अनदेखी मेहनत का हवन कुंड

यह नाटक भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा मार्च-अप्रैल '93 के दौरान देश के विभिन्न भागों में "समता कला जत्था" ने प्रस्तुत किया था। हम यहां उसके कुछ अंश दे रहे हैं। महिलाएं सुबह से रात तक कितनी मेहनत करती हैं जिन्हें न तो पुरुष, न वे स्वयं ही स्वीकार करती हैं। क्या इस योगदान को यों ही नकारा जाता रहेगा।

औरत सुबह उठकर जल्दी जल्दी घर के काम—झाड़ू देना, पानी भरना, नाश्ता तैयार करना आदि निबटाने में लगी है।

कोरस 1—जल्दी करो, जल्दी, जल्दी, जल्दी पिता के नहाने के लिए गर्म व बेटे के नहाने के लिए गुनगुना पानी।

कोरस 2—बच्चों की कंघी, कपड़े, टिफिन, बस्ता, पति का टिफिन जल्दी तैयार करो।

कोरस 3—इस मां के पास किसी के लिए समय नहीं है।

औरत इधर से उधर सबकी मांगें पूरी करती चक्कर खाकर गिर पड़ती है। पति से पूछा जाए उसकी पत्नी क्या काम करती है।

पति—मेरी बीवी कुछ काम नहीं करती।

जनगणना वाले आते हैं—

बहनजी, आपके पति क्या करते हैं?

जी, वह क्लर्क हैं।

आप क्या काम करती हैं?

औरत—*(रोटी पकाते-पकाते)* जी, मैं कुछ नहीं करती।

दूसरी औरत—*(ओखली में धान कूटते-कूटते)* जी, मैं कुछ नहीं करती।

तीसरी औरत—*(कपड़े प्रेस करते हुए)* जी, मैं कुछ नहीं करती।

कोरस 1—जल्दी करो, जल्दी करो, बच्चों के स्कूल से आने का समय हो गया। भूखे आएंगे।

कोरस 2—पति के साथ किसी सामाजिक कार्यक्रम में जाना है। जल्दी काम खत्म करो। पति के दफ्तर से आने का समय हो गया।

गाना

अदृश्य मेहनत के हवन-कुंड में
उनके जल रहे हैं दिन, जल रही हैं रात
घिसटते घिसटते घड़ी की सुई ज्यों
जिंदगी सारी जैसे मशीन बन गई है।
मन का दरवाज़ा बंद कर
भूल लोरी की धुन वो
आधी रातों को आंखें
थकी मुंदती हैं
आंखें हैं तो आधी रात बंद होने के लिए
बंद होंठ लगते हैं मौन ज़ख्म लिए हुए
चले थे जहां वहीं खड़े हैं
हज़ारों कदम चलने के बाद
अनदेखी मेहनत के हवन-कुंड में
उनके जल रहे हैं दिन-रात

कोरस 1—एक गृहणी दिन में कम से कम 10 घंटे काम करती है।

कोरस 2—एक कामकाजी औरत एक दिन में कम से कम 17 घंटे काम करती है।

कोरस 3—एक मज़दूर औरत दिन में कम से कम 18 घंटे काम करती है। □